अध्ययन सामग्री

विषय- हिन्दी

सेमेस्टर- प्रथम(1) स्नातकोत्तर

प्रश्न पत्र- प्रथम(cc-1)

काव्य भाषा के रूप में

अवधी का उदय और विकास

पदनाम- डॉ स्मिता जैन

एसोसिएट प्रोफेसर

हिंदी विभाग

एच डी जैन कॉलेज, आरा

22:32

Scanned with CamScanner

अर्द्धमागधी अपभ्रंश – जैन – पूर्वी हिन्दी
पूर्वी हिन्दी की बोली है – अवधी

काव्य-भाषा के रूप में अवधी का उदय और विकास –

अवधी का साहित्य में विशिष्ट स्थान है। अवधी के साहित्यिक रूप का विकास सोलहवीं सदी में ही प्रारंभ हुआ। मध्य-काल में अवधी में लिखे गये ग्रन्थों में दो प्रमुख हैं —

(1) जायसी-कृत – 'पद्मावत' (1540ई), जो शेरशाह सूरी के शासन-काल में लिखा गया था।

(2) तुलसी-कृत 'रामचरितमानस' (1574ई.) जो अकबर के शासनकाल में लिखा गया।

भक्ति-काल के प्रेमाख्यान काव्य की परम्परा को निरन्तर प्रवाह देने का कार्य अवधी ने ही किया है। राम-भक्ति का साहित्य भी अवधी में है। अवधी में वीर-रस प्रधान रचनाओं की भी प्रचुरता है। "जगनिक आल्हा खण्ड" को अवधी की प्रथम रचना या काव्य-कृति माना जाता है।

प्रेमाख्यान-परम्परा में जायसी, कुतबन, मंझन इत्यादि तथा 'राम भक्ति' शाखा-परम्परा में तुलसीदास, स्वामी अग्रदास, जानकीशरण, महाराज रघुराजसिंह के नाम स्मरणीय हैं।

आधुनिककाल के कवियों में माधवानन्द (शंकर दिग्विजय), पं. द्वारिका प्रसाद मिश्र (कृष्णायन), रमई काका, बलभद्र प्रसाद दीक्षित पढ़ीस, दयाशंकर दीक्षित देहाती, वंशीधर शुक्ल, शिवदुलारे त्रिपाठी, रमाकान्त श्रीवास्तव, शिवसिंह 'सरोज', [illegible]